गुरु वन्दना

हरि ओम गुरु जी

याद करूं गुरु देव की वन्दन
वाहे गुरु मुख माहिं उचारूं।

दो कर जोर धरूं चरणों पर,
जाउं सदा गुरु की बलिहारी।

कान सुने गुरु की उपमा,
गुरु मूरते ध्यान हृदय अवधारी।

श्री वाहे गुरु, गुरु नानक साहब,
सेवा के शरण गयो दरबारी।

आदि निरंजन है गुरु नानक,
तारन मूरत हैं जब आयो।

लोक सुन्यो परलोक सुन्यो,
ब्रज लोक सुन्यो सब दर्शन पायो।

संगत पार उतारण को,
गुरु नानक साहब पन्थ चलायो।

श्री वाहे गुरु, गुरु नानक साहब,
तारन मूरत हैं जग आयो।

ढूंढ फिरूं त्रिलोक के भीतर,
पूरन ब्रह्म बस्यो घट माहिं।

केते ही तीरथ खोज फिरयो,
और केते ही त्याग फिरूं मन माहिं।

केते ही वेद पुरान बखानत,
केते ही अंग विभूति रमायो।

कह श्रीचन्द्र विलास की मूरत,
है घट में घट की सुधि नाहीं।

एक समय अवधूत कहूं,
गुरु ज्ञान के बाण चलावनगे।

दैत्यों को मार के दूर कियो,
ब्रह्म खण्ड ही खण्ड उबारनगें।

श्री आत्माराम को ध्यान धरयो,
जब आप ही आप सम्भालणगें।

सतगुरु नानक निरवाण की ओट, लियो,
जटा जूट अमरावत पावनगें।

एकन के सिर मुण्ड मुंडावत,
एकन के सिरे सोहे सुकेशा।

एकन के जटाजूट विराजत,
एकन के सिर टोपी सुवेशा।

और आनन्द प्रकाश भयो,
एक नाम उदासी की सुन्दर वेशा।

कह श्रीचन्द्र धन्य गुरु नानक जी,
जिन गोविन्द-गोविन्द किया उपदेशा।

वाहे गुरु-गुरु धन्य गुरु सतगुरु,
सतगुरु- सतगुरु शरण तुम्हारी।

श्री राम हरे हरे राम हरे,
हरे राम हरे हरे राम मुरारी।

श्री कृष्णा हरे हरे कृष्णा हरे,
हरे कृष्ण हरे कृष्ण जिन द्रौपदी तारी।

श्री वाहे गुरु गुरु नानक साहब,
सेवा को शरण गयो दरबारी।

श्री गुरु नानक सन्तों के पालक,
पृथ्वी के मालिक हैं अवतारी।

होके दयालु करो जी निहाल,
काटो यम जाल यह अर्ज हमारी।

एहो आवाज मनो महाराज,
रखो मेरी लाज सुनो जी मुरारी।

संसार समुद्र से पार करो,
जैसे गौतम नारी अहिल्या को तारि।

मन में तो बसी बस चाह यही।
नित्य नाम तुम्हारा उच्चारा करूं।।

बिठला के तुम्हें मन मन्दिर में।
मन मोहिनी रूप निहारा करूं।।

भर के द्दग पात्रों में प्रेम का जल।
पद पंकज नाथ पखारा करूं।।

बनूं प्रेम पुजारी तुम्हारा प्रभु।
नित्य आरती भव्य उतारा करूं।।

तुम भूले से आवो यहां पे कभी।
द्दग नीर से चरण पखारा करूं।।

कर स्वच्छ सदा मन मन्दिर को।
उस आसन पे पधराया करूं।।

मृदु मंजुल भाव को माला बना।
तेरी पूजा का साज सजाया करूं।।

अब और नही कुछ पास मेरे।
निज प्रेम प्रसून चढ़ाया करूं।।

तुम आओ न आओ यहां पे कभी।
निशि वासर में ही बुलाया करूं।।

तेरे नाम की माला सदा ऐ सखे।
मन के मनकों में फिराया करूं।।

जिस पंथ पे पांव धर्‌यो तुमने।
पलकें उस पंथ में बिछाया करूं।।

भर लोचन की गगरी नित्य ही।
पद पंकज पे ढुलकाया करूं।।

तुम जान अयोग्य बिसारो मुझे।
पर मैं न तुम्हें बिसराया करूं।।

गुणगान करूं नित्य ध्यान धरूं।
तुम मान करो मैं मनाया करूं।।

तेरे प्रेम पुजारियों की पग धरूं।
मैं सदा निज शीश चढ़ाया करूं।।

तेरे भक्तों की भक्ति करूं मै सदा।
तेरे चाहने वालों को चाहा करूं।।

मन में तो बसी बस चाह यही।
नित्य नाम तुम्हारा उच्चारा करूं।।